ISSN 2395-051X

समाज शास्त्र, समाजशास्त्री और सामाजिक समस्यायें : एक विश्लेषण

डॉ. रश्मि दुबे
प्राध्यापक - समाजशास्त्र
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

समाजशास्त्र और सामाजिक समस्याओं के संबंध के बारे में तीन समस्यायें हैं जिनका विश्लेषण होना चाहियें ये समस्यायें हैः- 1. समाजशास्त्र सामाजिक समस्याओं को किस परिपेक्ष्य में देखता है? 2. सामाजिक समस्याओं के लिए समाजशास्त्र कौन से समाजशास्त्रीय सिद्धांत प्रस्तुत करता है? और 3. सामाजिक समस्याओं के बारे में समाजशास्त्रियों की जानकारी किस सीमा तक निष्पक्ष प्रमाणित एवं ठोस होती है? जहां तक समाजशास्त्रियों के संदर्भ के परिपेक्ष्य का प्रश्न है वे सामाजिक समस्याओं को ऐसी समस्याये मानते है जो समाज में व्यवस्थाओं और संरचनाओं की कार्य प्रणाली से उत्पन्न होती है या जो समूह के प्रभावों का परिणाम है। वे उन सामाजिक संबंधो से भी संबंधित है जो सामाजिक समस्याओं के कारण प्रकट होते है या जीवित रहते है।

समाजशास्त्र में सामाजिक समस्याओ का अध्ययन ऐसे नियमों को ढूढने की प्रबल इच्छा रखता है जो वैध और तर्क संगत हो तथा जिनसे कुछ समस्याओं में एक क्रमबद्ध सिद्धांत का निर्माण भी हो सकें। सामाजिक समस्याओं की समाजशास्त्रीय जानकारी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नही होती अपराध और मादक पदार्थो के सेवन जैसी समस्याओं के बारे में हमारे पास बहुत जानकारी है परन्तु दूसरी समस्याओं जैसे आत्महत्या, युद्ध और मानसिक रोग के बारे में हमारी जानकारी अपर्याप्त है। वैनवर्ग के अनुसार सामाजिक समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण सिद्धांत केंद्रित होने की अपेक्षा अधिक समस्याओं का अध्ययन समाज की व्यावहारिक अभिरूचि के कारण करते है ना कि सिद्धांत विकसित करने या सैद्धांतिक कमियों को भरने के दृष्टिकोण से जहां तक समाजशास्त्रियों की जानकारी के पक्षपात का प्रश्न है यद्यपि यह सम्भव है कि उनका अभिमुखीकरण और उनके मूल्य उनके सामाजिक समस्याओं के अध्ययन को प्रभावित कर सकते है। उदाहरण के लिये एक निम्न या मध्यवर्ग के समाजशास्त्री का रवैया अपने वर्ग के प्रति पक्षपातपूर्ण हो सकता है फिर भी वह उच्चवर्ग में विद्यमान भ्रष्टाचार का विश्लेषण अपनी व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं के आधार पर नहीं करता वह निष्पक्ष रहता है और उस पर दबाब को कोई प्रभाव नहीं होता फिर भी यह एक संभावना रहती है कि वे लोग जो कई सामाजिक समस्याओं से जुड़े होते है। नई जानकारी प्राप्त होने पर उसको प्रभावित कर सकते है। जैसे मद्यपान वह स्थिति है जिसमें एक व्यक्ति मदिरा लेने की मात्रा पर नियंत्रण खो बैठता है जिससे कि वह पीना आरम्भ करने के पश्चात उसे वन्द करने में सदैव असमर्थ रहता है। केलर एवं एफ्रोन के अनुसार मद्यपान वह लक्षण है जिसमें मदिरा को इस सीमा तक बार बार पिया जाता है जो कि उसके प्रथागत उपयोग या समाज के सामाजिक रिवाजों के अनुपालन से अधिक है और जो पीने वाले के स्वास्थ्य या उसके सामाजिक अथवा आर्थिक कार्य करने को प्रभावित करता है।

मद्यपान की बड़ी समस्याओं में से एक यह है कि व्यक्ति अपने आप को मद्यसारिक नहीं मानता। एक अमेरिका के मनोचिकित्सक राबर्ट वी सेलिन्जर ने बीस प्रश्नों की एक परीक्षण सूची बनाई है। यदि इन प्रश्नों मे से कुछ के भी उत्तर हाँ में हैं तो व्यक्ति को उसे आने वाली विपत्ति की चेतावनी समझना चाहिए। परीक्षण सूची के कुछ प्रश्न इस प्रकार है :- 1. क्या पीने के कारण काम पर जाने में आपको देरी हो जाती है? 2. क्या पीना आपके पारिवारिक जीवन को दुखी बना रहा है? 3. क्या पीने से आपकी प्रतिष्ठा प्रभावित हो रही है? 4. क्या आपने पीने के बाद ग्लानि का अनुभव किया है? 5. क्या पीने के कारण आपको वित्तीय समस्या हुई है? 6. क्या पीने के परिणामस्वरूप आम निम्न स्तर के साथियों की ओर प्रवृत्त होते है? 7. क्या आपका पीना आपको अपने परिवार के कल्याणकी ओर से लापरवाह बनाता है? 8. क्या पीने के बाद से आपकी महत्वकांक्षा कम हुई है? 9. क्या प्रतिदिन एक निश्चित समय पर आपको पीने की तीव्र इच्छा होती है? 10. क्या पीने से आपको सोने मे कठिनाई आती है? 11. क्या पीने के बाद से आपकी कार्यकुशलता कम हुई है? 12. क्या पीना आपकी नौकरी या व्यापार को जोखिम में डाल रहा है? 13. क्या आप अपना आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए पीते है ?

मादक पदार्थो के दुरूपयोग को न केवल विपथगामी व्यवहार के रूप में बल्कि एक सामाजिक समस्या की तरह भी देखा जा सकता है। पहले दृष्टिकोण से इसे व्यक्ति के सामाजिक असमायोजन के प्रमाण के रूप में माना जाता है, जब कि दूसरे दृष्टिकोण से इसे वह सुविस्तृत स्थिति कहा जाता है। जिसमें समाज के लिए घातक व क्षतिप्रद परिणाम मिलते है। कुछ पश्चिमी देशो मे मादक द्रव्यों के सेवन को लम्बे समय से एक महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या माना गया है, परन्तु भारत ने केवल पिछले डेढ़ दशक से ही इसे घातक सामाजिक समस्या माना है।

वर्तमान में छात्र-छात्राओं में नशा एक गंभीर सामाजिक समस्या है तथा देश समाज व परिवार के लिए नशा एक अभिशाप है। यह एक ऐसी बुराई है जिससे इंसान का अनमोल जीवन समय से पहले ही मौत का शिकार हो जाता है। नशे के लिए समाज में शराब, गांजा, अफीम, स्मैक जैसे घातक मादक दवाओं और पदार्थो का उपयोग किया जा रहा है। इसमें व्यक्ति को शारीरिक मानसिक आर्थिक हानि के साथ-साथ वह अपने वातावरण को भी दूषित करता है। साथ में परिवार वालो को भी इसका खामियाजा भुगतना पडता है। और ऐसे व्यक्ति अपनी समाज में प्रतिष्ठा भी खो देते है। एवं उसकी समाज और देश के लिए भी उत्तरदायित्व भी शून्य हो जाता है। जो व्यक्ति नशे के अपराध की ओर अग्रसर हो जाता है। वह समाज के लिए अभिशाप बन जाता है। नशा एक अन्तनर्राष्ट्रीय विकराल समस्या बन गई दुर्व्यसन से आज स्कूल जाने वाले छोटे-छोटे बच्चों से लेकर बडे बुजुर्ग और विशेषकर युवा वर्ग बुरी तरह प्रभावित हो रहा है।

विश्व स्वास्थ संगठन द्वारा प्रस्तुत आंकडो के अनुसार दुनिया में 5 करोड़ से ज्यादा लोग मादक पदार्थो के सेवन से संबंधित है। कॉलेज स्कूल तथा विश्वविद्यालय के छात्र छात्राओं में मादक द्रव्यों का प्रचलन श्रवण प्रदूषण की तरह फैला है। विश्व में नशीली दवाओं के दो मुख्य केन्द्र गोल्डन ट्रायएंगल एवं गोल्डन क्रीसेन्ट है। ट्रायएंगल में लाओस वर्मा तथा थाइलैण्ड तथा क्रीसेन्ट में ईरान अफगानिस्तान सम्मिलित हैं। इसके साथ विश्व के लगभग सभी देशों में मादक द्रव्यों का उपयोग होता है। और अधिक मात्रा में आज का युवा वर्ग ही सबसे ज्यादा इसमें लिप्त है। आज आवश्यकता है देश व समाज की इस समस्या के लिए संयुक्त आक्रमण की जो समाजशास्त्रियों के अध्ययन व शिक्षाविदों द्वारा ही संभव है।

ISSN 2395-051X

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि समाज की विभिन्न समस्याओं का अध्ययन समाजशास्त्रियों द्वारा ही संभव है क्योंकि समाजशास्त्री द्वारा किसी भी घटना के कारणों का पता लगाया जाता है तथा इनका समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। इसका अध्ययन भी समाजशास्त्री द्वारा किया जाता है। इसके अलावा समाजशास्त्री यह भी अध्ययन करते हैं कि किसी भी घटना के दुष्प्रभाव को कम करने के क्या उपाय किये जा सकते है। तथा समाज के विकास के लिये क्या कदम उठाये जा सकते है। इस प्रकार समाज शास्त्रियों व सामाजिक घटनाओं का अध्ययन की दृष्टि से बहुत घनिष्ट संबंध है।

सन्दर्भ

1. आहूजा, राम : सोशियालॉजी ऑफ यूथ सब कल्चर, रावत पब्लिकेशन, जयपुर 1982
2. रामचन्द्रन, व्ही : ड्रग्स एब्यूस डन इंडिया, मद्रास 1984
3. आनन्द प्रकाश सिंह : सामाजिक समस्यायें और अपराध यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन नई दिल्ली, 2007
4. लाइव इंडिया (पत्रिका) : नशाखोरी एक भयावय सच विशेषांक, समूह जीवन कार्यालय पुण से प्रकाशित, दिसम्बर 2014
5. इंडिया टुडे (पत्रिका) : कुछ अपना करने की धुन विशेषांक लिविंग मीडिया, इंडिया लिमिटेड नोएडा दिल्ली, जनवरी 2016